स्थापन हो रही है और अवश्य होनी है। तो तुम बच्चों के पास तो खुशी होनी है ना; क्योंकि ये तो निश्चय, जानते हो कि बादशाही स्थापन ज़रूर होनी है। बाकी है पुरुषार्थ करना। पीछे यहाँ पुरुषार्थ करें या वहाँ जा करके करें जंगल में; क्यों(कि) वो तो फिर जंगल है। (बाबा ने बीच में कहा– फिर क्या हुआ! अरे हम, हम बैठे बच्चे, बैठो–3) वास्तव में बगीचा भले छोटा है और नया है बिल्कुल। बगीचा तो ये है ना बच्ची! इस ब्राह्मण के बगीचे से ट्रान्सफर होना है देवता बगीचे में। पर देवता तो यहाँ बन रहे हो ना मनुष्य से। तो ये अगर यहाँ रहना, अगर सर्विस बाहर की नहीं है तो यहाँ रहना तो अच्छा है फिर। अगर सर्विस बाहर की कर सकते हैं तो बहुत अच्छा है कि किसका जाके कल्याण करें और नहीं तो यहाँ बहुत अच्छा है सन्मुख। सन्मुख आने के लिए तो देखो कहाँ दूर–2 से आना पड़ता है और ऐसे बहुत आते हैं, जो दिल, (उनकी) दिल होती है– तो हम रह जावें, कुछ–न–कुछ वक्त रह जावें; परन्तु रह नहीं सकते हैं जास्ती दिन। यहाँ तो इसको कहा जाएगा कि अपरम्पार खुशी बच्चों के लिए। जिन बच्चों को निश्चय है कि हम ये विश्व का मालिक बनते हैं, तो उनसे और क्या चाहिए! बाकी बाबा कहते हैं– तो पुरुषार्थ करके विश्व की राजधानी में, विश्व–राजधानी में अपना ऊँचा पद पाना चाहिए। तकलीफ कोई नहीं है बच्चे, अपनी बुद्धि की तकलीफ है, जो बुद्धि इस तरफ नहीं लगाई जाती। बहुत, तुम किसके भी पास; जब ये थोड़ा महत्व बढ़ जाएगा बच्चों का और सबको मालूम हो जाएगा और तुम कार्ड अंदर भेजेंगी– ब्रह्माकुमारी फलानी, तो तुमको दर पर रिसीव करने आएँगे; क्योंकि तुम बच्चियाँ हो किसका जीवन हीरे जैसा बनाने वाली। तो जैसे–2 ये अपना ये बढ़ता जाएगा बड़े–2 सेन्टर में, ये दिल्ली जैसे में, बड़ा म्यूज़ियम खुल जाएँगे और वहाँ अच्छी तरह से लिखेंगे कि भारत को फिर से स्वर्ग की बादशाही मिल रही है वा भारत को विश्व की बादशाही मिल रही है फिर से; क्योंकि ये तो सभी जानते हैं। (बाबा ने बीच में कहा– अरे! फिर जाती हो!) भारत को विश्व की बादशाही 5000 बरस पहले मिसल कैसे मिल रही है– ये कोई कम नहीं है लिखत, जो लिख जाते, सब खुश होंगे ना! ये है खुशी की एनाउन्समेन्ट या गॉडली एनाउन्समेन्ट कि भारत को फिर से सतयुगी विश्व की बादशाही (...); क्योंकि सतयुग में है ही विश्व की बादशाही एक के हाथ में। तो सतयुग की विश्व की बादशाही कैसे भारत को फिर से मिल रही है, आय समझो। कितना क्लीयर है अक्षर अच्छे, फिर से मिल रही है या शिवबाबा द्वारा भारत को विश्व की बादशाही फिर से कैसे मिल रही है– ये भी बहुत अच्छा सुन्दर अक्षर है ना! तो ऐसे–2 सुन्दर अच्छे–2 अक्षर पैगाम पहुँचाने का, खुशखबरी सुनाने का, जाँच–2 करके निकाल के बाबा के आगे ले आना कि बाबा, ऐसा लिखाने से कैसा ठीक होगा! अभी नोट किया किसने या भूल गया? क्योंकि ये बाबा लिखवाते हैं ना, उनको लिखवाते। यहाँ भी ऐसे बोर्ड लिखवाएँगे कि भारत को फिर से विश्व की बादशाही और भले 5000 बरस पहले मिसल दी। क्यों? तुम समझाते हो कि थ्री थाउजन्ड बिफोर क्राइस्ट, तो हो गया ना! वो भी लिख सकती हो कि 3000, थ्री थाउजेन्ड बिफोर क्राइस्ट जैसे ये भारत हैविन था, फिर से हैविन बन रहे हैं। तो हैविन बन रहे हैं तो हैविनली गॉडफादर ही बनाएँगे, और कोई थोड़े ही बनाय सकेंगे! तो ऐसे–2 टोटके कोई लिख करके भी बाबा को देंगे, तो बाबा बहुत थैंक्स देगा। खुशी होगी कि हम लिख देवें, कि ऐसे–2 उन म्यूज़ियम के ऊपर लिख दिओ; क्योंकि आके समझो, फिर लिखा जाता है विथ फैक्ट्स एंड फिगर्स (प्रूफ–प्रमाण) एण्ड इलेस्ट्रेशन्स (चित्र या चित्रण)। अभी इंगलिश अक्षर है तो उसकी हिन्दी फिर करनी पड़ेगी। बाबा कोई अक्षर इंगलिश में अच्छी तरह से कह सकते हैं तो फिर हिन्दी नहीं कह सकते हैं; कभी कोई हिन्दी कह सकते हैं तो इंगलिश नहीं कह सकते हैं; क्योंकि न वो पूरी पढ़ी है, जो न वो पूरी पढ़ी है और भाषा कैसी भी हो और मतलब से काम है अपना। और

ऐसे भी लिख सकते हो– तो शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो तो मैं विश्व की बादशाही देऊँगा। फिर भले आ करके पूछें, शिव भगवानुवाच्य– हे बच्चो! मुझे याद करने से; क्योंकि ये अक्षर बहुत ठीक लगते हैं। शिवबाबा कहते हैं, बोर्ड भी लगा हुआ होवे– मुझे याद करो तो विश्व की बादशाही तुमको मिलेगी; क्योंकि मन्मनाभव, मद्याजीभव का भी यही अर्थ है। देखो, कितनी सहज बाते हैं समझाने के लिए।...वो भी दिन आएगा जो तुम ये अक्षर सुनाएँगे किसको और वो समझा और लग गया तीर, तो पता नहीं कितना तुमको मान–इज्जत देंगे। इसे नोट करके रखना है; क्योंकि यहाँ भी आएँगे कोई आर्टीस्ट, तो लिखाएँगे कोई से। (किसी ने कहा–हाँ जी!) या तो कोशिश करके कोई आर्टीस्ट मँगाय लेता हूँ, बैठ करके लिखते रहेंगे। फिर कोई काम न होगा, तो और कुछ काम करते रहेंगे। सबके लिए कहते हैं कि जहाँ कोई भी सेन्टर खोलो, तो म्यूज़ियम के मिसल खोलो, अच्छे भभके से। मकान भी थोड़ा अच्छा लिओ, भले छोटा ही होवे तो भी उसमें (...)। मकान ऐसा लिओ, जिसमें ये म्यूज़ियम खोला जाए। तो वो अच्छा भभके से खोलेंगे, चित्र थोड़ा लगेंगे, तो स्थायी आते रहेंगे। तो तुम बच्चे बिज़ी रहेंगे। नहीं तो सारा दिन घुटका खाते रहो, नए–2 दुकान उनमें, कोई–2 दो–दो, चार–चार रोज़ में एक आवे। अगर म्यूज़ियम खुला हुआ होगा तो वो समझा करके सुनाएँगे और सब आएँगे, आ करके समझेंगे और बच्चों को समझाने में भी ऐसे सहज होते हैं। किसको कह कह देना है कि देखो, ये कितने 50/5/500 करोड़ हैं कि कितना 50/5 (किसी ने कहा–500 करोड़) क्या कहते 500 करोड़। तो थोड़ा ख्याल तो करो, आओ चित्र पे दिखलावें– तो भारत में पहले–2 तो थोड़ा था ना, जभी स्वर्ग था। तो ज़रूर ये जो लड़ाई है, इन बहुतों का विनाश के लिए है, नैचरल कैलेमिटीज़ भी है। तो ये तो निश्चय करना चाहिए कि स्वर्ग तो आते हैं। अभी स्वर्ग की बादशाही कैसे मिले? सो तो बाप कहते हैं– मुझे याद करते रहो, तुम्हारा विकर्म विनाश होगा, पावन बन करके मेरी बादशाही ले लेंगे स्वर्ग की। जैसे पहले सतोप्रधान थे तैसे सतोप्रधान बन करके; वहाँ तो रहने का है नहीं, पार्ट तो आ करके बजाना है ज़रूर। पार्ट बिगर तो कोई रह भी नहीं सकते हैं। ड्रामा के प्लैन अनुसार पार्ट बजाना ही है। अच्छा, चलो बच्ची! (म्युज़िक बजा)

मीठे–2 रूहानी सर्विसेबुल बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार और गुडनाइट।